Part - II Paper - III Unit - 4

Types Of Rural Settlement

S. Mazumdar

जिन मानव बस्तियों के निवासी कृषि और पशुपालन द्वारा जीविका उपार्जन करते हैं, उन बस्तियों को ग्रामीण बस्तियाँ कहते हैं

प्रत्येक ग्रामीण बस्ती के दो तत्व होते हैं। 1) गतिशील तत्व - इसके अन्तर्गत बस्ती के आर्थिक एवं सामाजिक संगठन आते हैं, 2) स्थैतिक तत्व - इसके अन्तर्गत मकान और मार्ग आते हैं जो निवास करने वालों को आश्रय देते हैं और उनके सामानों की सुरक्षा करते हैं।

आवासों के आकार, बसाव प्रतिरूप रचना विन्यास एवं कार्य आदि विशेषताओं के आधार पर ग्रामीण अधिवासों का चिर-सम्मत वर्गीकरण दो प्रकार से है 1) एकल या प्रकीर्ण 2) सामुहिक, न्याष्ठित, गुच्छित, ठोस या सघन ग्रामीण अधिवास, वर्तमान समय में बसाव की सघनता एवं प्रकीर्णन के आधार पर ग्रामीण अधिवासों को मुख्यतः पाँच प्रकारों में विभाजित किया जाता है

1) सघन ग्रामीण अधिवास :→ ऐसे अधिवासों को गुच्छित, संकेन्द्रित, न्याष्ठित एवं सामूहिक आदि नामों से जाना जाता है, इसमें मकान या झोपड़ियाँ पास-पास सटे हुए होते हैं, इसके चारों ओर खेत खलिहान या बगीचे स्थित होते हैं, सघन ग्रामीण अधिवासों के आकार के आधार पर नगला, पुरवा या पल्ली या ग्राम वर्गों में बाँटते हैं, ऐसे अधिवास मुख्यतः समतल भूमि, उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी, पर्याप्त भूमिगत जल एवं उपयुक्त जलवायु वाले क्षेत्रों में पाई जाती है क्योंकि यहाँ कृषि के लिए सहयोग एवं संगठन की भावना और जातीय सम्बद्धता पाई जाती है ऐसे अधिवास भारत के उत्तरी मैदानों में पाए जाते हैं, यहाँ के छोटे गाँव भी 500 से अधिक जनसंख्यावाले होते हैं, यहाँ कृषक, खेतीहर मजदूर और अन्य सेवाओं जैसे कुम्हार, बढ़ई, लोहार, नाई, पुरोहित, डोम, चमार

आदि भी निवास करते हैं, अनुकूल परिस्थितियों के सहयोग से जैसे यातायात, बाजार, ग्रामीण उद्योग आदि धीरे धीरे विकसित होकर भविष्य में कस्बा या शहर, नगर का रूप धारण कर लेते हैं।

2) अर्द्धसघन अधिवास :→ अर्द्धसघन अधिवासों को पुरवा या नगला या Hamlet कहते हैं, इसमें छोटे छोटे अधिवास विस्तृत भूभाग पर फैले होते हैं, इनमें से कुछ बड़े भी होते हैं कभी कभी एक बड़ा गाँव कई पुरवों को मिलाकर बनता है। जिसमें कई भौतिक, आर्थिक एवं सामाजिक कारणों से परिवार या जाति के लोग छोटी छोटी बस्ती बनाकर रहते हैं, बाद में यही नगला अनुकूल परिस्थिति के आधार पर बड़ा गाँव बन जाता है।

भारत में ऐसे अधिवास साधारणतः हिमालय क्षेत्र और पहाड़ी भागों में पाए जाते हैं, गंगा के मैदानी भाग खासकर तराई और बाढ़ ग्रस्त भूमि में ऐसे अधिवास काफी पाए जाते हैं, भारत की अधिकांश आदिवासियाँ ऐसी ही बस्ती बनाकर रहते हैं।

3) संयुक्त अधिवास :→ ऐसे अधिवास में एक गाँव के साथ उनके कई पुरबे भी जुड़े होते हैं।

4) अपखण्डित ~~बस्तियाँ~~/अधिवास :→ ऐसी बस्तियाँ जिनमें वास गृह अलग अलग होके भी एक ही बस्ती के अन्दर एक दूसरे से निकट बसे हुए होते हैं, विशेषतः पूर्वी बंगाल के क्षेत्र में ऐसी बस्तियाँ ~~बनाती~~ पाई जाती हैं, इनके घर आपस में एक दूसरे से अलग होते हुए भी सब घर मिलकर एक सामूहिक बस्ती बनाते हैं।

5) विकीर्ण/प्रकीर्ण या बिखरा/एकाकी अधिवास :→

ऐसे अधिवासों को एकल अधिवास भी कहते हैं, जिसमें मकानों की संख्या एक या कुछ घरों तक ही सीमित रहती है। अधिवास दूर x दूर तक बिखरे हुए होते हैं, ऐसे अधिवास भारत के पठारी भाग और हिमालय के ढालों पर पाए जाते हैं। जहाँ जीवन-यापन के साधन न्यूनतम होते हैं, चरवाहे, आदिम कृषक, मधुआरे आखेटक आदि ऐसे ही एकल बस्तियों में रहा करते हैं, इन बस्तियों में कृषिगृह या वासगृह अलग अलग हुआ करते हैं।

—x—